मेरे

माँ

और

पिताजी

को समर्पित

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए.,बी.एड्.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि ***श्री. भास्कर उमराव भवर*** द्वारा लिखित ***''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन''*** ('सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' के संदर्भ में) लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान - कोल्हापुर .
तिथि - 14.02.2001

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. इरेश स्वामी
एम्.ए., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
स्नातक तथा स्नातकोत्तर, हिंदी विभाग,
संगमेश्वर महाविद्यालय,
सोलापुर.

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि ***श्री. भास्कर उमराव भवर*** ने मेरे निर्देशन में ***''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन''*** ('सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' के संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व-योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्र के कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान :- कोल्हापुर।
तिथि :- १२ फरवरी २००९

शोध-निर्देशक

(डॉ. इरेश सदाशिव स्वामी)

प्रख्यापन

"चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन" ('सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' के संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 14-02-2001

शोध-छात्र

Bhavar B. U.

(श्री. भास्कर उमराव भवर)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य जगत में कहानी विधा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। साहित्य के क्षेत्र में काव्य को छोड़कर उपन्यास, नाटक आदि विधाएँ उन्नीसवीं सदी के मध्य में उपजी हैं। परंतु कहानी लिखित रूप से पहले ही व्यावहारिक रूप में मानव के विकास के साथ-साथ ही शुरू हो चुकी थी।

कहानी विधा में चंद्रकांता सिद्हस्त है। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य के विकास में चंद्रकांता ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। 'नई कहानी' की एक महत्त्वपूर्ण लेखिका के रूप में उन्हें माना जाता है। चंद्रकांता ने कहानी के अलावा उपन्यास, काव्य भी लिखे हैं। परंतु उनकी रुचि कहानी लेखन में अधिक रही। इसीलिए उन्होंने कहानी विधा में सफलता पाई है।

चंद्रकांता की सशक्त कहानी 'नूराबाई' मैंने पढ़ी। चंद्रकांता की इस प्रभावशाली कहानी ने मुझे प्रभावित किया। शिक्षित परिवार में रहनेवाली चंद्रकांता एक साधारण निम्न-मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाली गरीब नारी की व्यथा को इतनी गहराई और प्रभावशाली ढंग से कैसे अंकित कर सकती है ? यह सवाल बार-बार मुझे परेशान करता रहा।

जब मुझे एम्. फिल, करने का मौका मिला तो इसी प्रश्न को समझने और जानने का अवसर मैंने हाथ से जाने नहीं दिया। नारी के प्रति चंद्रकांता की जो संवेदनाएँ हैं, उन्हें चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में सशक्त रूप से चित्रित किया है। इसके साथ-साथ उन्होंने मध्यवर्गीय समाज की समस्याएँ, आतंकवाद का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। इसी कारण मैंने एम्. फिल. की उपाधि के लिए प्रस्तुत विषय का चयन किया। चंद्रकांता की कहानियों पर शोध-कार्य आरंभ करते समय मेरे मन में जो प्रश्न उपस्थित हुए वे इस प्रकार हैं -

1. चंद्रकांता का व्यक्तित्व और कृतित्व कैसा है ?
2. चंद्रकांता की कहानियों के मूल विषय कौन-से हैं ?
3. विवेच्य कहानियों में कौन से वर्ग का चित्रण हुआ है ?
4. विवेच्य कहानियों में मध्यवर्गीय समाज की समस्यों का चित्रण किन रूपों में मिलता है ?

5. चंद्रकांता की कहानियों में कौन-कौन-सी विशेषताएँ मौजूद हैं ?

6. कहानी कला की दृष्टि से चंद्रकांता की कहानियाँ कैसी हैं ?

इन सभी प्रश्नों के जो उत्तर हैं, उन्हें प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के उपसंहार में दिए गए हैं।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्न-लिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय - ''चंद्रकांता : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' में चंद्रकांता की जीवन-यात्रा का चित्रण किया है। इसमें उनका जन्म, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, शादी, नौकरी आदि का विवेचन है। जीवन-यात्रा के साथ उनकी रचनाएँ, रचनाओं का प्रकाशन तथा प्रकाशन वर्ष का विवरण दिया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय - ''चंद्रकांता की कहानियों का संक्षिप्त परिचय'' में कहानियों की कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनकी कहानियाँ किस विषय से संबंधित हैं, इसे प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज हैं।

तृतीय अध्याय - ''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज का स्वरूप'' में चंद्रकांता की कहानियों में मध्यवर्ग का चित्रण है। उनकी कहानियों में चित्रित मध्यवर्ग के विभिन्न पात्रों का चित्रण किया है। कहानियों के माध्यम से समाज का वर्गीकरण किया है। तत्पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, वे अध्याय के अंत में प्रस्तुत हैं।

चतुर्थ अध्याय - ''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन की समस्याएँ'' में मध्यवर्गीय समाज में आनेवाली समस्याओं का चित्रण किया गया है, जो चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित हैं। इस अध्याय में उनकी कहानियों में चित्रित सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

पंचम अध्याय - ''मध्यवर्गीय जीवन-चित्रण एवं कहानी-कला की दृष्टि से विवेच्य कहानियों की विशेषताएँ'' इसके अंतर्गत कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज के विविध पात्रों की विशेषताओं का चित्रण किया है। चंद्रकांता की कहानियों का विवेचन कहानी-कला की दृष्टि से किया है और कहानी कला के आधार पर विवेच्य कहानियों पर प्रकाश डाला है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में उपसंहार दिया है, जिसके अंतर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात आधार-ग्रंथ और संदर्भ-ग्रंथ सूची के लिए उपयुक्त पुस्तकों की सूची दी गई है।

ऋणनिर्देश

इस शोध-कार्य को संपन्न करने में जिन ज्ञात-अज्ञात देवियों और सज्जनों का सहयोग और आशीर्वाद मिला। उनका यहाँ ऋणनिर्देश करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

मैं सर्व प्रथम अपने आदरणीय गुरुवर्य डा. इरेश स्वामी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनके अमूल्य मार्गदर्शन में मैं अपना शोध-कार्य पूरा कर सका। गुरु के साथ-साथ एक शुभ-चिंतक रूप से भी आपने मुझे प्रेरित, प्रोत्साहित किया, मेरी अनेक समस्याओं को हल किया। आपके कारण मेरी अनेक बाधाएँ हल हुई। आपका यह आत्मीयतापूर्ण स्वभाव मुझे जीवन भर याद रहेगा, जिसके लिए मैं आजीवन कृतज्ञ रहूँगा।

मेरे माता-पिता, भाई राजेंद्र और भाभी पद्मिनी, भाई अशोक और भाभी कामिनी इन सबके आशीर्वाद और सदिच्छा के कारण ही मैं अपना शोध-कार्य बिना अवरोध पूरा कर सका। साथ ही मेरे आदरणीय गुरु, डा. अर्जुन चव्हाण, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने अपनी अन्य व्यस्तताओं के बावजूद भी मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन किया। डॉ. पी. एस्. पाटील सर जी ने भी मौलिक मार्गदर्शन किया। अध्यापक भारत खिलारे, कांबळे मॅड्म ने भी मुझे समय-समय पर उचित परामर्श देकर मेरा हौसला बढ़ाया। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मदद की।

मेरे दोस्त, जॉर्ज क्रूस, जयसिंग खिलारे, सौदागर साळुखे, हनुमंत शेवाळे, साताप्पा चव्हाण, गीरीश काशीद, पंडित बन्ने, भाऊसाहेब नवले, मल्लिकार्जुन चौखंडे और अमर रजपूत आदि से मुझे अनमोल मदद मिली। उन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया।

प्रस्तुत शोध-कार्य का टंकन सुचारू रूप से करनेवाले श्री. अल्ताफ मोमीन का भी मैं आभारी हूँ।

अंत में एक बार फिर मैं इन सभी को मन:पूर्वक धन्यवाद देता हूँ। अंत में उन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहकार्य मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ है, उन सब का मैं ह्रदय से आभार प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

Bhavar B.U.

(भास्कर उमराव भवर)

कोल्हापुर।

तिथि : 14-02-2001